कैथरीन
और
नागा साधुओं की रहस्यमयी दुनिया
संतोष श्रीवास्तव

कैथरीन

और

नागा साधुओं की रहस्यमयी दुनिया

संतोष श्रीवास्तव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2024

© संतोष श्रीवास्तव

समर्पण

मेरे देश के नागा साधुओं को जिनका त्याग, तप और शौर्य इतिहास में दर्ज है, जिन्होंने सनातन धर्म और देश के रक्षार्थ शस्त्र और शास्त्र एक कमांडो की तरह उठाए।

और खुलते गए द्वार

महाकुंभ दुनिया का सबसे बड़ा मेला ...सन 2012 में इलाहाबाद (प्रयागराज) मैं 55 दिन तक चलने वाले महाकुंभ में जाने का इत्तफाक हुआ। दुनिया का अद्भुत अलौकिक नजारा। शाम होते ही मेले में लगी लाइटें जगमगा जैसे आसमान में सितारों की चादर बिछा दी गई हो जैसे 58 वर्ग किलोमीटर के गहने में हीरे जड़ दिए हैं।

करोड़ों की भीड़ में अलग दिखते नागा साधु

मेरे लिए उन्हें देखना, उन पर लिखना मेरी बरसों की चाह का अभूतपूर्व समय था। मैंने महाकुंभ में बिताए दिनों को नागा साधुओं के अखाड़े में जाना, उनके रहस्यमय जीवन की जानकारी लेना, उनका साक्षात्कार लेना, उनके विषय में बारीक से बारीक जानकारी लेने में ही खर्च किया।

नागा साधुओं पर ऐसा कोई ग्रंथ या पुस्तक मुझे उपलब्ध नहीं हुई जिससे मैं संदर्भ लेती। उपन्यास में नागा साधुओं पर जो कुछ भी मैंने लिखा है वह नागा अखाड़ों से प्रत्यक्ष ली जानकारी के अनुसार है। नागा साधुओं पर लिखना एक चुनौती थी जिसे स्वीकार करते हुए मैंने 2015 से यह उपन्यास लिखना शुरू किया जो 2021 के मार्च में पूरा हुआ। वर्षों की कड़ी मेहनत और नागा साधुओं में मेरी प्रगाढ़ रुचि का परिणाम है यह उपन्यास। इसमें मैंने काल्पनिक कथा भी पिरोई है।

हालांकि नागा साधुओं के विषय में यदा-कदा अखबारों में पढ़ने मिल जाता है कि किसी नागा ने दो नागाओं की मदद से विदेशी स्त्री से विवाह किया। जिसकी वजह से तीनों नागा साधुओं को अखाड़े से बाहर निकाल दिया गया। भविष्य में ऐसे हालात न बनें, इसके लिए अखाड़े ने यह कदम उठाते हुए विदेशियों के प्रवेश को प्रतिबंधित करने का फैसला किया है। विदेशियों के साथ अखाड़े के किसी भी व्यक्ति के मेलजोल पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। अखाड़े का मानना है कि विदेशियों के संपर्क में आने से नागा गलत संगत में पड़ रहे हैं। इसी भटकाव के चलते नागा ने विदेशी के साथ शादी की।

नागा साधुओं की रहस्यमयी दुनिया पर लिखा यह उपन्यास बल्कि दस्तावेज आप को सौंपते हुए मैं अंतर्मन से अभिभूत हूँ।

संतोष श्रीवास्तव

आश्विन मास

विक्रम संवत 2078

(अक्टूबर 2021)

भाग 1

चारों ओर से बर्फीली हवाएँ उसके पत्थर हुए बदन को हिलाने चीरने की कोशिश में लगी थीं। पर नरोत्तम गिरी ध्यान में मग्न अलौकिक आनंद में डूबा था। शून्य से भी नीचे के तापमान में उस के किसी भी अंग पर कोई प्रभाव नजर नहीं आ रहा था । हिमालय की दुर्गम बर्फीली पर्वत श्रंखलाएँ पर वह डेढ़ साल से साधना में लीन था।

कई दिनों बाद धूप खिली थी। नरोत्तम गिरी पर्वत से नीचे उतर गया। बहती हुई बर्फीली जलधारा में उसने देर तक स्नान किया। धूप में उसका संगमरमरी बदन स्फटिक सा चमक उठा। फिर संपूर्ण श्रृंगार रुद्राक्ष, भस्म, तिलक धारण कर उसने अपने आराध्य देव का स्मरण करते हुए मंत्र का जाप किया।

एवरेस्ट पर विजय पताका फहरा कर लौट रहे पर्वतारोहियों के दल ने नरोत्तम गिरी को देखा। उसके व्यक्तित्व और नागाओं के स्वरूप को देख वे उसके नजदीक आए- "बाबा जी प्रणाम, हम अभी-अभी एवरेस्ट की चोटी पर भारत का झंडा फहरा कर लौटे पर्वतारोही हैं। इस शून्य से भी कम तापमान में आप को निर्वस्त्र देख चकित हैं । कैसे संभव है बाबा..." पर्वतारोहियों में से एक ने पूछा।

बर्फीली हवाओं में सिर से पैर तक गर्म कपड़ों से लदे होने के बावजूद भी ठंड से बचने की कोशिश में वे अपने चमड़े के दस्तानों वाले हाथ ओवरकोट की जेब में ठूंसे थे। नरोत्तम का डेढ़ साल बाद मौन टूटा था- "हम सन्यासी हैं । संसार में रहते हुए भी संसार से दूर..."

“अमेजिंग, विश्वास करना असंभव लग रहा है फिर भी हम तो आपको साक्षात देख रहे हैं। अविश्वास का कारण ही नहीं। हम आपसे अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं लेकिन पहले थोड़ा भोजन। आप भी हमारे साथ खाइए यह सब डिब्बाबंद चीजें और गर्म कॉफी।”

“हम तो एक समय यानी संध्या वंदन के बाद भोजन करते हैं। आप लोग खाइए।”

“नहीं, हम भी शाम होने पर आपके साथ ही खाएंगे। हमारा कोई ऐसा बंधन नहीं है। चलते फिरते खाते रहते हैं । अभी कॉफी बिस्किट ले लेते हैं।”

वे कॉफी पीते हुए बिस्किट खाते रहे । नरोत्तम गिरी ने ही बात आगे बढ़ाई- “आप जानना चाहेंगे कि हम नागा क्यों बने?”

“जी बाबा जी, आपकी इतनी शुद्ध अंग्रेजी, हिंदी, भव्य व्यक्तित्व जैसे आप किसी यूनिवर्सिटी के चांसलर हों। बताइए ,आप नागा क्यों बने? क्या प्रेम में धोखा या करियर में असफलता ?”

नरोत्तम गिरी गंभीर हो गया। अपनी डेढ़ वर्ष की कठोर साधना तपस्या में वह इस प्रकरण को भूल चुका था । मान लिया था कि नागा के रूप में उसका पुनर्जन्म हुआ है। उसी की आज पुनरावृत्ति!

कितना सघन अंधेरा था। जैसे सदियों की रातें, अमावस्याएँ, तमाम रोशनी सूरज, जुगनू, दीपक की लौ को परे ढकेल आच्छादित कर रही थी मंगल को ।